Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 12, December - 2023 Publication Date: 31/12/2023

DOIs:10.2018/SS/202312005 --:-- Research Paper / Article / Review

राजनीतिक भूगोल में राष्ट्र, राज्य - राष्ट्रराज्य

(Nation, state-Nationstate in political geography)

Dr. Aditi C. Ashiya
Assistant Professor, Geography Department, L.D. Arts College, Navrangpura, Ahmedabad, Gujarat, India
Email - aditi198725@gmail.com

सारांश (*Abstract):* राजनीतिक भूगोल में राष्ट्र व राज्य के अर्थ, प्रकृति व निर्माण प्रक्रिया एवं भौगोलिक विशेषताओं में पर्याप्त अंतर है। धरातल पर राज्य व राष्ट्र की सीमाएं सामान्यतः अध्यारोपित रूप में पाई जाती है। राष्ट्र स्वाभाविक विकास के लंबे काल का परिणाम होता है जो किसी भी क्षेत्र के रीति रिवाज, धर्म, भाषा, जाति आदि की एकता से निर्मित है। जबकि राज्य के विकास में राजनीतिक प्रक्रियाएं प्रभावकारी भूमिका रखती है। राज्य में तीन तत्व है- क्षेत्र, जनसंख्या व संगठन। यह तीनों तत्व मिलकर राज्यों के पारस्परिक अंतः क्रियात्मक संगठनों द्वारा एक संगठित राजनीतिक क्षेत्रीय इकाई में परिवर्तन करते हैं।

मुख्य शब्द (*Key Words):* क्षेत्रिय इकाई, कार्यात्मक इकाई राष्ट्र, राज्य, राष्ट्रराज्य।

1.प्रस्तावना (introduction):

किसी देश के विकास प्रक्रम में राष्ट्र पहले निर्मित होता है फिर समान राजनीतिक आकांक्षाओं एवं परिस्थितियों में एक राष्ट्र या कई राष्ट्र मिलकर राज्य की स्थापना में सहायक होते हैं। राष्ट्र और राज्य के निर्माण की प्रक्रिया पूर्णतया भौगोलिक तत्वों पर आधारित है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों की धरातलीय अवस्थिति व जलवायु संबंधी विविधता ही राष्ट्र और राज्य के निर्माण में सहयोग करते हैं। इन विशेषताओं का प्रभाव मानव प्रजाति, भाषा, धर्म, संस्कृति, रहन-सहन आदि पर पड़ता है, जिससे विभिन्न प्रकार की राष्ट्रीयता का जन्म होता है। राष्ट्रीय की उत्पत्ति से मानव जीवन सुरक्षित व व्यवस्थित नहीं होता है जब तक कि उस क्षेत्र में कोई शासन तंत्र कार्य न करें। यह प्रशासन तंत्र मानव की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में प्रकट होता है। और इसी धारणा से राष्ट्र से राज्य का विकास होता है। यह आवश्यक नहीं है कि एक राष्ट्र से एक ही राज्य का उद्भव हो, बल्कि एक राज्य में अनेक राष्ट्र व एक राष्ट्र में अनेक राज्य हो सकते हैं।

2.उद्देश्य(objectives):

(i) राजनीतिक भूगोल में राष्ट्र क्या है।
(ii) राजनीतिक भूगोल में राज्य क्या है।
(iii) राजनीतिक भूगोल में राष्ट्रराज्य क्या है।

3.विधितंत्र (Methodology):

यह पेपर आंकड़ों के द्वितीयक स्रोत पर आधारित है, जिसमें मुख्यतः राजनीतिक भूगोल की पुस्तकें सम्मिलित है। नवीनतम सूचनाओं और जानकारियों के लिए इंटरनेट का भी प्रयोग किया गया है।

4. राजनीतिक भूगोल में राष्ट्र, राज्य व राष्ट्रराज्य की अवधारणा :

राष्ट्र की संकल्पना- Nation शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा से हुई है जिसका अर्थ जन्म या जाति अर्थात प्रजातीय समानता वाला जनसंख्या समूह से है। राष्ट्र जनसमूह का क्षेत्रीय संगठन है। जिसमें लोग प्रजातीय, धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषा, जातिगत एवं रहन-सहन की भावना से परस्पर जुड़े रहते हैं जैसे फ्रेंच, जर्मन, डच, आयरिश, इंडियन, चीनी आदि। राज्य के समान यह संप्रभुता संपन्न इकाई नहीं होती है। लेकिन क्षेत्रिय अस्तित्व पर आधारित होती है। राष्ट्र व राज्य की सीमा की कोई अनुरूपता नहीं होती है। एक राज्य में कई राष्ट्र व एक राष्ट्र में कई राज्य सम्मिलित हो सकते हैं। विश्व में कई द्विराज्य व बहु राज्यीय राज्य भी है जैसे कनाडा, ग्रेट ब्रिटेन, टर्की, आयरलैंड, गुयाना आदि बहुराष्ट्रीय राज्य है जबकि फ्रांस बेल्जियम व स्विट्जरलैंड को एक माना जाता है क्योंकि इनमें फ्रेंच भाषा के आधार पर सामाजिक व सांस्कृतिक एकता है। दक्षिणी अफ्रीका गणराज्य बहु राष्ट्रीय राज्य है। यहां अंग्रेज, बौद्ध व शोषित अफ्रीकी के तीन राष्ट्रीयता के लोग हैं। पॉण्ड्स ने लिखा है कि जिस भू भाग पर लोग जन्म लेते हैं व बसते हैं उसे पर अपना राष्ट्र मानते हैं अर्थात राष्ट्र एक ऐसा मानव समूह है जिसमें लोग विभिन्न तत्वों के संदर्भ में आपस में जुड़े रहने की भावना के कारण अपने समूह के प्रति वफादार रहते हैं और उनका क्षेत्रीय प्रसार समूह में विस्तार तक रहता है।

हार्टशोन लिखा है कि राष्ट्र जनसंख्या के एक विशेष वर्ग द्वारा निर्मित इकाई का बना होता है तथा राजनीतिक समुदाय के रूप में अनेक कारणो से जागरूक बना रहता है। आधुनिक युग में यह भी उल्लेखनीय है कि यदि राज्य पूर्णतया विकसित, कार्यात्मक रूप से विकसित है तो प्रत्येक क्षेत्रीय समुदाय धीरे-धीरे अपनी पहचान को समाप्त करके एक राष्ट्रीय संस्कृत विकसित कर लेता है लेकिन वह सभी राज्यों में सही नहीं है जैसे पाकिस्तान का धार्मिक आधार पर गठन होने के बाद भी वहां राष्ट्रीयता का विकास नहीं हुआ। भारत में कई क्षेत्रिय विशिष्ट पहचान वाले समुदायों का अस्तित्व है जो अपने समुदाय के प्रति वफादारी पहले दिखाते हैं जबकि राज्य का विकास बाद में देखते हैं। अर्थात यहां राष्ट्रीयता का विकास हो रहा है। यदि यहां मिलने वाली जनसंख्या के विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक विभिन्नताओं के बावजूद भी विभिन्न क्षेत्रीय इकाई के लोग और अपार्थिव एकता और एक राष्ट्रीय संस्कृति विकसित कर ले तो राज्य और राष्ट्र समानार्थी हो सकते हैं। ऐसा राज्य अधिक स्थाई और कार्यात्मक रूप से अधिक संगठित बन सकता है और उसके टूटने का खतरा नहीं है।

राष्ट्र के वस्तुनिष्ठ तत्व-१. समान भाषा
२. रीति रिवाज और परंपरा में साम्य
३.धार्मिक एकता
४.प्रजाति समानता
५.भौगोलिक सलंग्नता
६. आर्थिक समानता।

राष्ट्र की विशेषताएं-
१. राज्य की तरह राष्ट्र भी क्षेत्रीय आधार रखता है। राज्य का क्षेत्र एक संप्रभुता संपन्न इकाई रहता है। राज्य का क्षेत्र समुदाय विशेष का किसी राज्य सीमा में हो या एक राज्य से दूसरे राज्य में फैला है।
२. राष्ट्र क्षेत्र में रहने वाली जनसंख्या सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से एकीकृत रहती है। और एकीकरण की यह भावना दूसरे जनसंख्या समूह से प्रतिस्पर्धा के संदर्भ में बढ़ती जाती है।
३. राष्ट्र विचार के मूल में रक्त संबंधी एकता महत्वपूर्ण है। भाषा, धर्म, जाति आदि गौण कारक है।
४. राष्ट्र क्षेत्र में रहने वाला मानव समुदाय राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के कारण ही सामाजिक, सांस्कृतिक रूप में एकीकृत होकर अपना विशिष्ट व्यक्तित्व विकसित करता है, जो दूसरे मानव समुदाय से उसे अलग करता है।
५. समुदाय में रहने वाले लोग सबसे पहले अपने समुदाय के प्रति निष्ठावान रहते हैं, बाद में यह राज्य के प्रति उत्तरदायी रहते हैं।
६. यदि किसी राज्य में ऐसे विभिन्न समुदाय विकसित हो जाए व ऐतिहासिक प्रक्रिया में सभी समुदाय मिलकर एक सामुहिक राजनीतिक सोच व चरित्र विकसित कर ले तथा उनकी स्वतंत्रता अभिव्यक्ति के चिन्ह गौण हो जाए तो राष्ट्र का उदय होता है।

राष्ट्र की विकास प्रक्रिया: राष्ट्र विकास मानव समाज के राजनीतिक, सामाजिक एकीकरण के ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। यह एकीकरण विभिन्न समाजों में सामाजिक तथ्यों के प्रसार के कारण संभव होता है और यह प्रक्रिया निम्न चरणों से होकर के राष्ट्र का विकास करती है।
१. समाज: मनुष्यों का ऐसा समूह जो एक साथ मिलजुल कर कार्य करते हैं। प्रारंभिक स्तर पर क्षेत्रीय समीपता के कारण मनुष्य आपस में मिलजुल कर रहने की प्रक्रिया विकसित करता है धीरे-धीरे उन्हें पारस्परिक समझदारी व भावनात्मक विकास होता है जो उन्हें एक दूसरे से जोड़ने में सहायक होता है बाद में इसी से मानव समाज बनता है।
२. समुदाय: ऐसे मनुष्यों का एक समूह जो विभिन्न प्रकार की सूचनाएं प्रभावशाली तरीके से एक दूसरे के पास पहुंचाते हैं।
३. मनुष्य: मनुष्यों का यह समुदाय पूरक संचार प्रणाली का अंग रहता है।

राज्य की संकल्पना- राज्य धरातल पर एक क्षेत्रिय इकाई है तथा इसमें निवास करने वाली जनसंख्या एक राजनीतिक प्रशासनिक संगठन से मिलकर संपूर्ण क्षेत्रीय इकाई को एक कार्यात्मक इकाई का रुप प्रदान करती है। जे. डब्ल्यू. ने अपनी पुस्तक 'political science and government' में लिखा है कि - 'राज्य न्यूनाधिक बहुसंख्यक लोगों का एक ऐसा समुदाय है जो स्थाई रूप से एक निश्चित भूभाग पर निवास करता है, बाह्य नियंत्रण से लगभग या सर्वथा स्वतंत्र हो और जिसकी एक ऐसी संगठित सरकार हो जिसके आदेशों को उसके निवासियों का एक बहुत बड़ा भाग स्वाभाविक रूप से पालन करता हो।' राज्य पृथ्वी के धरातल पर एक ऐसी इकाई है जिसका निर्माण समान राजनीतिक विचारों वाली कोई क्षेत्रीय इकाइयों से मिलकर होता है। सम्मिलित रूप से संपूर्ण जनसंख्या एक केंद्रीय राजनीतिक एवं प्रशासनिक संगठन के साथ मिलकर सभी इकाइयों में कार्यात्मक अंतर संबंध का विकास करके क्षेत्रिय इकाई को ही एक पूर्णतया विकसित एवं राजनीतिक रूप से संगठित संप्रभुता संपन्न राजनीतिक इकाई बना देता है।

राज्य की विशेषताएं- १. राज्य एक क्षेत्रीय इकाई है। यह कई उपयुक्त क्षेत्र से मिलकर बनती है। इसके विभिन्न भौतिक तथ्य है जैसे स्थिति, आकृति, आकार, बनावट,जलवायु, खनिज, नदियां झीलें आदि।

२. राज्य एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं है बल्कि वह राजनीतिक रूप से निर्मित है। अतः कोई क्षेत्रीय इकाइयां समान राजनीतिक विचारों के कारण आपस में मिलकर उसे क्षेत्रीय इकाई का निर्माण करती है।
३. सभी क्षत्रिय इकाइयों की जनसंख्या किसी स्तर पर अलग-अलग सामाजिक, सांस्कृतिक परंपराओं वाली हो सकती है लेकिन समान राजनीतिक उद्देश्य होने से वह आपस में मिलकर एक राजनीतिक इकाई का निर्माण करती है।
४. राज्य अपने पड़ोसी राज्यों से राजनीतिक सीमाओं द्वारा अलग होता है।
५. निर्धारित सीमाओं के अंदर राज्य संप्रभुता संपन्न होता है।
६. निर्धारित सीमाओं के अंदर क्षेत्रीय इकाई से राज्य अवधारणाओं का प्रचार प्रसार होता है, जिसमें सभी क्षेत्रीय इकाइयां धीरे-धीरे अपने को एक इकाई के रूप में आत्मसात कर लेती है।
७. प्रत्येक राज्य का नाभिकीय क्षेत्र होता है जो सघन आवासीत भाग होता है।
८. एक विकासशील राज्य अपने प्राकृतिक संसाधनों के आधार पर अपना क्षेत्रीय विस्तार करती है।
राजनीतिक क्षेत्रीय इकाई के अंतर्गत राज्य एक संप्रभुत्व संपन्न इकाई है। वह आंतरिक व बाह्य कार्यों को संपन्न करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र होता है। मूडी ने लिखा है कि आधुनिक राज्य संप्रभुता संपन्न राज्य है। अर्थात उसका अपनी सीमा क्षेत्र और जनता पर प्रभुता होती है तथा वह किसी अन्य सत्ता के प्रति उत्तरदाई नहीं होता है और वह राजनीतिक रूप से पूर्णतया स्वतंत्र रहता है।

राष्ट्रराज्य (The Nation state)- राष्ट्र एवं राज्य की भौगोलिक अनुरूपता उनके क्षेत्रीय विस्तार की आदर्श स्थिति का धोतक है। हार्टशोन ने 1968 में कहां की राज्य जब राष्ट्र के अनुरुप होता है तो सर्वाधिक दृढ़ता स्थायित्व ग्रहण किया होता है। राजनीतिक भूगोलवेता राजनीतिक क्षेत्र संगठन के इस आदर्श स्वरूप को राष्ट्र राज्य के रूप में स्वीकार करते हैं। राष्ट्र राज्य अवधारणा का राजनीतिक भूगोल में बहुत महत्व है। राष्ट्र राज्य का निर्धारण सभी आवश्यक तत्व का राज्य के क्षेत्र में मिलना कठिन होता है।
१. राष्ट्र राज्य की भौगोलिक अनुरूपता,
२. राजनीतिक संगठन व प्रभावी संचार व्यवस्था,
३. संप्रभुता संपन्नता (आर्थिक, राजनीतिक,सामरिक),
४. क्षेत्रीय आर्थिक साम्यता,
५. भावनात्मक एकात्मकता।

उपरोक्त सभी बातें जिन राज्यों में पाई जाती है, उन्हें राष्ट्र राज्य श्रेणी में रखा जाता है। यदि सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया जाए तो राष्ट्र राज्य की सभी आवश्यक बातें किसी भी राजनीतिक इकाई में विद्यमान नहीं है। कभी कोई राज्य 'राष्ट्र राज्य' के रूप में हो सकता है। कालांतर में उसकी स्थिति बदल भी सकती है। विश्व के नए राज्य उच्च कोटि में पदार्पण कर सकते हैं। विश्व में कुछ राष्ट्र राज्य है जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, स्वीडन, न्यूजीलैण्ड आदि। एक राष्ट्र क्षेत्र में किसी राजनीतिक प्रक्रिया के फलस्वरूप यदि दो राज्यों का निर्माण हो गया है तो सामाजिक व सांस्कृतिक एकता के कारण उनमें एकीकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है, जर्मनी इसका उत्तम उदाहरण है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ये दो राज्य पूर्वी व पश्चिमी जर्मनी में विभक्त हो गया परंतु सामाजिक लगाव व सांस्कृतिक समानता के तत्व जिन्हें अभिकेंद्रीय बल कहा जाता है। दोनों राज्य के तत्व जिन्हें अभिकेंद्रीय बल कहा जाता है। दोनों राज्य 2 अक्टूबर 1991 को एकीकृत करने में सफल हुआ। इस प्रकार जर्मनी राज्य से राष्ट्र राज्य बन गया। इसी प्रकार वियतनाम में एक राष्ट्र में दो राज्य थे वे भी इसी प्रक्रिया के तहत एक हो गए। सोवियत संघ बहुराष्ट्र राज्य था जो दिसंबर 1991 में विभाजित होकर 11 स्वतंत्र राज्य बन गया। 1972 में पाकिस्तान से बांग्लादेश का विभाजन एक राज्य में राष्ट्र भिन्नता के कारण हुआ। राष्ट्र राज्य का विकास वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक राष्ट्र में अपने राज्य के प्रति निष्ठा व भक्ति भावना का विकास होता है। इस भावना की प्रबलता राज्य को स्थायित्व प्रदान करती है। राष्ट्र राज्य में समूह के धार्मिक, जातीय, भाषायी आदि सभ्यता का होना आवश्यक है। इन क्षेत्रीय विभिन्नताओं के बावजूद यदि इसमें सामाजिक लगाव व एकता है तो राष्ट्र राज्य की स्थापना हो सकती है।

5. निष्कर्ष: इस प्रकार ऐसी राजनीतिक इकाई जिसके क्षेत्र सुपरिभाषित हो और बड़ी संस्था व कुशल लोगों से आवासित हो जो शक्ति प्राप्त करने के लिए पूर्णतः संगठित हो और लोग भावनात्मक और अन्य बंधनों से स्वयं को राष्ट्र समझते हो ये बंधन कानून व सरकार के यथार्थ रूप में अभिव्यक्त किए जाते हो, एक आदर्श राष्ट्र राज्य कहा जा सकता है। जब विश्व के अधिकांश राज्य राष्ट्र में परिवर्तित होकर राष्ट्र राज्य बन जाएंगे, तब विश्व की अधिकांश समस्याएं सुलझ जाएगी।

REFERENCES:

1. Adhikari Sudeepta 2017, political Geography, Rawat Publication, New Delhi.
2. Dwivedi R.L., Misra, H.N. 2019, Fundamentals of Political Geography, Surjeet Publication, New Delhi.

Websites:

- http://chass.usu.edu>nation-state
- https://link.springer.com>chapter